Department of Political Science
D.B. College Jaynagar
B.A. PART- III - Pub. Ad.

By- A.K. Yadav
(Asstt. Prof. Gptt.)
Date- 21/09/20

Lecture No. 19 & 20

नवीन लोकप्रशासन
(New public Administration)

लोक प्रशासन का जन्म एक स्वायत्त विषय के रूप में 1887 से माना जाता है जब वुडरो विल्सन ने अमेरिकी जर्नल में प्रकाशित अपने लेख The Study of Administration में राजनीति प्रशासन द्वि-विभाजन के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया तथा लोक प्रशासन के विकास हेतु इसे राजनीति विज्ञान से पृथक किया। स्वायत्त विषय के रूप में स्थापित होने के बाद ही लोक प्रशासन की प्रकृति व क्षेत्र में परिवर्तन होता रहा है। इसके कई कारण हैं। जैसे- लोक प्रशासन का एक सामाजिक विज्ञान होना, इसका पर्यावरण से सम्बन्धित होना, इसका नवीन व विकासोन्मुख विषय होना तथा मूल्य सापेक्षता को इसके द्वारा आधार बनाया जाना।

लोक प्रशासन के सामाजिक, मूल्य सापेक्षता, विकासोन्मुख, पर्यावरण सम्बद्ध विषय होने के कारण इसकी प्रकृति व क्षेत्र में 1968 के पश्चात व्यापक परिवर्तन आया है। 1968 के बाद लोक प्रशासन के द्वारा सामाजिक न्याय और सामाजिक परिवर्तन, ग्राहक केन्द्रित व्यवस्था, प्रभावशीलता एवं प्रासंगिकता, मूल्य व तथ्य सम्बद्धता, राजनीति प्रशासन में एकीकरण पर जोर दिया जाने लगा है। लोक प्रशासन के क्षेत्र में आए इस परिवर्तन को ही नवीन लोकप्रशासन कहा जाता है। दूसरे शब्दों में नवीन लोक प्रशासन को 1968 के पूर्व का लोक प्रशासन भी कहा जा सकता है। अन्तर सिर्फ इतना है कि इसके द्वारा नवीन मूल्यों का समर्थन किया जाता है, अर्थात 1968 के पश्चात लोक प्रशासन के क्षेत्र में नवीन विचारों का सूत्रपात हुआ है जिन्हें नवीन लोकप्रशासन की संज्ञा दी गई है। नवीन लोकप्रशासन के विकास में हनी प्रतिवेदन 1967, लोक प्रशासन के ~~सम~~ सिद्धान्त एवं व्यवहार सम्बन्धी सम्मेलन 1967, मिन्नोब्रुक सम्मेलन 1968 तथा द्वितीय मिन्नोब्रुक सम्मेलन 1988 की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। यह उल्लेखनीय है कि 1971 में फ्रैंक मेरिनी द्वारा सम्पादित पुस्तक Towards A New Publicate Administration Minnow

Scanned with CamScanner

Brook Prospective के प्रकाशन के साथ ही नवीन लोक प्रशासन को मान्यता प्राप्त हुई है। सन 1971 में ही ड्वाइट वाल्डो के संपादन में 'Public Administration in a Time of Turbulance' का प्रकाशन हुआ। जिससे भी नवीन लोकप्रशासन के विकास को बल मिला। सन 1980 में प्रकाशित H. George Fredrikson की पुस्तक 'Public Administration Development As A Discipline' से भी नवीन लोकप्रशासन के विकास को बल मिला है।

हनी प्रतिवेदन 1967 (The Honey Report, 1967)

अमेरिकी विश्व विद्यालयों में लोक प्रशासन के स्वतंत्र विषय के रूप में अध्ययन की सम्भावनाओं की तलाश करने हेतु 1966 में प्रो० जॉन सी. हनी के नेतृत्व में एक समिति गठित की गई। उसी समिति ने अध्ययनोपरान्त 1967 में अपना प्रतिवेदन दिया। जिसे ही हनी प्रतिवेदन कहा जाता है। प्रो. हनी ने अपने प्रतिवेदन में निम्नलिखित 4 समस्याओं का सविस्तार वर्णन किया है।

(1) अमेरिकी विश्वविद्यालयों में एक अनुशासन के रूप में लोकप्रशासन के अध्ययन व शोध हेतु धन का अभाव है।

(2) लोकप्रशासन के प्रकृति की सम्बन्ध में विवाद है।

(3) अमेरिका के लोकप्रशासन के विभागों में अपूर्णता व्याप्त है।

(4) लोकप्रशासन के विद्वानों और सेवारत ~~प्रशासकों~~ प्रशासकों में अन्तर है।

उपर्युक्त समस्याओं को देखते हुए Prof. Honey द्वारा निम्न लिखित सुझाव प्रस्तुत किये गये -

(1) लोक प्रशासन और सार्वजनिक मामलों सम्बंधी विद्यालयों एवं कार्यक्रमों शिक्षा करने वाले व्यक्तियों के लिये विशेष छात्रवृत्ति योजना, शुरु की जानी चाहिए।

(2) प्रतिवेदन में लोक सेवा, शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय आयोग की स्थापना पर बल दिया गया। इस आयोग का दायित्व शासन के लिए आवश्यक शिक्षित मानव शक्ति उपलब्ध कराना निश्चित किया गया।

(3) नवीन लोक प्रशासन कार्यक्रम के लिए नवीन. परामर्शदात्री सेवा शुरू करनी चाहिए। ~~सार्वज~~

(4) सार्वजनिक मामलों सम्बन्धी शिक्षण व शोध पाठ्यक्रम तथा कार्यक्रम के लिये विश्व विद्यालयों द्वारा अनुदान दिया जाना चाहिये,

(5) शासकीय एवं सार्वजनिक मामलों सम्बन्धी शोध कार्य में लगे हुए व्यक्तियों को आर्थिक एवं अन्य प्रकार की सहायता दी जानी चाहिये।

End

Scanned with CamScanner